

druckten Texte haben weit häufiger die Form उशनाम्; der voc. soll nach dem Sch. zu P. 7, 1, 94 und Vop. 3, 156 उशनम्, उशन und sogar उशनन् sein können. तं वृष इन्द्र पूर्वो भूर्वरिचस्पृशने काव्याय । परा नर्ववास्वमनुदेयं महे पित्रे देदाथ स्वं नपातम् RV. 6, 20, 11. युवं शिञ्जामुशनामुपारथः 10, 40, 7. उशना काव्यस्त्वा नि होतात्मसादयत् 8, 23, 17. आ गा घ्राजुशना काव्यः सचा 1, 83, 5. यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाहृत्रकृणं पार्यं ततत् वर्षम् 121, 12. घृहं कविरुशना spricht Indra 4, 26, 1. ऋधृर्धिर उशना काव्येन 9, 87, 3. प्र काव्यमशनेन ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति 97, 7. शंतात्युक्थमशनेन वेधाः 4, 16, 2. तत्तयत्त उशना सहेसा सहः 1, 51, 10. मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचा 11. उशनसे काव्याय KAUC. 139. रातसेन्द्रमुवाचेदमसुरेन्द्रमिवोशना R. 6, 31, 14. MBh. 1, 34, 11. उशना वेदयक्कात्रम् 4002. HARIV. 66. 2504. PĀNĀT. I, 199. बुद्धा त्वमुशनाः MBh. 12, 5045. कवीनामुशनाः कविः BHAG. 10, 37. उशनाश्च प्रसन्नार्चिः R. 5, 73, 53. काव्यं तूशनसम् MBh. 1, 3188. व्याताशोशनसः पुत्राश्चवरो ऽसुराजकाः 2544. काव्यादुशनसः 3193. शुक्रेणोशनसा 3204. HARIV. 8963. शास्त्रमुशनसा प्रणीतम् PĀNĀT. V, 76. KUMĀRAS. 3, 6. am Anfange eines comp.: गाथाद्याप्युशनोगीताः HARIV. 1159. उशनोक्त्यबोधिताः 16284. बृहस्पत्युशनेतिथ्य मल्लैः MBh. 3, 15146. नयैः 11294. — JĀGĀ. 1, 4. VP. 272. 420. 82, N. 1. उशनःसंकिता GILD. Bibl. 446. उशनस स्तोमः heisst eine Recitation, welche anzuwenden ist, wenn sich Jmd vergiftet glaubt. Sie enthält die Sprüche RV. 5, 29, 9. 31, 8 (vgl. u. उशना). ĀÇV. Ça. 9, 5.

उशना (von वप्) adv. (alter instr.) begierig, freudig, eilig: यदेतं मृगाय कृत्वे मृकवधः सहस्रभृष्टमुशना वधं यमत् wann er die tausendzackige Waffe begierig erhebt RV. 5, 34, 2. उशना यत्सहस्रेऽरयात् गृकृमिन्द्र (und Kutsa) ब्रूवन्वनेभिरशैः 29, 9. उग्रमयातमवकेल कृ कुत्सं स कृ यदामुशनारत्त देवाः 31, 8. उशना यत्परवतो ऽजगन्तये कवे als du begierig von Ferne zu Hilfe geeilt warst o Kavi (Indra) 1, 130, 9. अथ ऽमन्तोशना पृच्छते वो कर्दशा न आ गृहम् da fragt man euch eilig Ziehende (Indra und Vāta): wohin des Weges? (kommt ihr) in unser Haus? 10, 22, 6.

उशनौ (wie eben) f. die Begehrte, als Name einer Pflanze beigelegt, aus welcher Soma bereitet wird, ÇAT. Br. 3, 4, 2, 13. 4, 2, 5, 15.

उशिन् (wie eben) 1) adj. heischend, eifrig strebend; zugethan, bereitwillig NAIGH. 2, 6. 3, 15. मेदेषु वृषनुशिज्ञो यदाविद्य सखीयतो यदाविद्य RV. 1, 131, 5. धियो हिव्वाना उशिज्ञो मनोषिषाः 2, 21, 5. उशिगृहृत्यनोः 3, 11, 2. 13, 3. व्रजं गोमत्तममुशिज्ञो वि वृजः 4, 1, 15. यज्ञं तन्वाना उशिज्ञो न मन्म 7, 10, 2. 5. गृहा चतत्तममुशिज्ञो नमोभिरिच्छतो धीरा भृगवो ऽविन्दन् 10, 46, 2. उप देवान्देवीर्विशः प्रागुरुशिज्ञो वङ्गितमान् VS. 6, 7. उशिक्तं देव सोमाम्नेः प्रियं पाथो ऽपीहि 8, 50, 5. 3, 2. 15, 6. RV. 1, 60, 2. 4. 128, 1. 3, 3, 7. TS. 3, 5, 2, 2. उशिगसि कविरसि ÇĀNKH. GRHJ. 6, 12, 19. — 2) m. geschmolzene Butter; Feuer Uṇ. 2, 70. — 3) f. N. pr. einer Slavinn, der Mutter von Kakshiyant, IRH. bei ROSEN zu RV. 18, 1. — Vgl. औशिज.

उशी (wie eben) f. Wunsch Uṇ. 1, 1. im ÇKDra.

उशीनर m. pl. N. pr. eines Volkes des Mittellandes; im sg. Name des Beherrschers dieses Volkes: ये के च कुरुपञ्चालानां राजानः सवशोशीनराणाम् AIT. Br. 8, 14. KAUSH. UP. in Ind. St. 1, 213. 419. P. 2, 4, 29 (AK. 3, 6, 2, 28). 4, 2, 118. gaṇa यैधिपादि zu 4, 1, 178 und 5, 3, 117. तीरपाणा उशीनराः 8, 4, 9, Sch. sg. MBh. 1, 227. 7000 (ein Vṛshṇi). 2, 325. 3, 10537 (उशीनर). fg. HARIV. 1674. fg. VP. 444. उशीनरगिरि KATHAS. 3, 5. f. उशीनरणी RV. 10, 39, 10: य अर्वहदुशीनराण्या अन्नः. — Vgl. औशीनर.

उशीर ÇĀNT. 3, 18. Uṇ. 4, 31, 1) m. n. SIDDH. K. 249, b, 4. die wohlriechende Wurzel von Andropogon muricatus Retz. AK. 2, 4, 5, 29. H. 1138. SUÇA. 1, 139, 10. 140, 16. 145, 21. 314, 16. 344, 5. 2, 24, 6. 53, 1. Nir. 2, 5. R. 2, 55, 14. उशीरानुलेपन ÇĀK. 31, 7. स्तनन्यस्तोशीर (वपुः; v. l. ऽस्तोशीर) 57. — 2) f. उशीरी eine best. Grasart (लघुकाश, vulg. कोटकाश्या) RĀGĀN. im ÇKDra.

उशीरक n. = उशीर 1. RATNAM. im ÇKDra.

उशीरगिरि (उ + गि) m. N. pr. eines Berges (= उह्मुण्ड) VJUTP. 102. SCHIEFNER, Lebensb. 309 (79). — Vgl. d. f. W.

उशीरवीज (उ + वी) m. N. pr. eines Berges MBh. 3, 10820. HARIV. 12854. R. 6, 3, 32. उषो 4, 41, 46. 48. Im gaṇa राजदत्तादि zu P. 2, 2, 31, der comp. mit versetzten Gliedern enthält, उशीरवीजम्.

उशीरिक adj. f. ई mit Uçitra handelnd gaṇa किसरादि zu P. 4, 4, 53.

उशैत्य (von वप्) adj. wünschenswerth, zu erstreben RV. 6, 3, 9.

1. उष्, औषति; औषत्; उवाष und औषा चकार P. 3, 1, 38. Vop. 8, 80. औषीत् P. 6, 1, 90, Sch.; उष्ट, उषित (gebrannt AK. 3, 2, 48. TRIK. 3, 3, 150. H. 1486. an. 3, 253. MED. t. 96); औषित्वा Vop. 26, 207; urere, brennen Dhātup. 17, 45. दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा RV. 1, 173, 3. 130, 8. AV. 12, 5, 54. 19, 29, 7. ÇAT. Br. 14, 4, 2, 2. तस्य मूत्रप्रतीघातादुष्यते चूष्यते दह्यते पच्यत इव SUÇA. 1, 262, 13. औषा चकार कामाग्निदशवक्त्रम् BHAT. 6, 1. औषा चक्रे (pass.) शुचा 14, 62. — züchtigen: दृष्टेनैव तमप्योषेत M. 9, 273. — verzehren, zu Grunde richten: हिरण्यमायुरन्नं च भृगोश्चाप्योषतस्तनुम् । अश्नश्नत्त्वचं वामो घृतं तेजस्त्रिलाः प्रजाः ॥ M. 4, 189. — अग्नि ambrennen: अयुष्टमिष्टं ÇAT. Br. 11, 2, 2, 23. — Vgl. अयुष. — अष, davon अषोष. — उद् durch Gluth vertreiben: अग्निरेनं कव्यात्पृथिव्या नृदतामुदोषतु AV. 12, 5, 72. मा मेदिषिष्टे मा मा हिंसिष्टम् ÇAT. Br. 1, 5, 1, 25. 7, 3, 2, 14. मा मेदिषोः ÇĀNKH. GRHJ. 1, 5, 9. उडुष्टमुख ein röthliches (nach dem Sch.) Maul habend (Pferd) ÇAT. Br. 7, 3, 2, 14.

— उप aufbrennen, verbrennen: उपोषति बर्हिः, उपोषेत् TS. 3, 3, 8, 4. अग्निना वा कलमुपोषेत् ĀÇV. GRHJ. 2, 4.

— समुप zusammenbrennen: तमग्निभिः समुपोषेत् ÇAT. Br. 12, 5, 1, 13. 17, 2, 2.

— नि niederbrennen: न्यमित्रौ औषतात् RV. 4, 4, 4. इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यर्शसानमोषति 8, 12, 9. 7, 104, 1. 10, 87, 12. AV. 12, 3, 73.

— प्रति versengen: स त्वमग्ने प्रतीकिन प्रत्योष यातुधान्यः RV. 10, 118, 8. प्रति तमोषतो यः प्रत्युष्यः ÇAT. Br. 1, 9, 2, 2. प्रत्युष्टं रत्नः VS. 1, 7. KAUC. 3.

— सम् verbrennen AV. 12, 5, 54. तमुषतो ऽग्निशिखे समोषत्यौ तिष्ठतः ÇAT. Br. 1, 9, 2, 2.

2. उष्, उच्छति s. वप्.

3. उष् s. वप्.

4. उष (2. उष्) f. Frühlicht, Morgen; Licht: तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्ति. स्तो अयर्धयन् RV. 8, 41, 3. उष उषो हि वंसा अयर्धयन् 10, 8, 4. उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः 3, 6, 7. उषो न जारः 1, 69, 1. 9. 7, 10, 1. उषस्पतिः AV. 16, 6, 6.

1. उष (von 2. उष्) adj. leuchtend: स्वर्णं देदेरूपेण भानुना RV. 2, 2, 8. Nach MRO. sh. 4: m. Tagesanbruch. — Vgl. उषा.

2. उष (von 3. उष्) adj. begierig, verlangend: सा वसु रधती अग्रराय